3

कुलुस्सियों के लिए पौलुस की प्रार्थना

कुलुस्सियों 1:9-14

पौलुस ने कुलुस्से के लोगों को आश्वस्त किया कि उसने उन्हें मिलने वाली आशिषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया (1:3-8)। आयतें 9 से 14 में उसने भले कामों के द्वारा आत्मिक समझ और उत्पादकता के लिए प्रार्थना की। ऐसी विनती का उसका उद्देश्य यह था कि मज़बूत होकर वे धीरज और आनन्द से परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं जिसने उन्हें ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मिरास साझा करने के योग्य बनाया था (आयतें 11, 12)। उन्हें अंधकार के वश में से छुड़ाकर, जिसमें उन्हें उनके पापों से छुड़ाया और क्षमा किया गया था।

उनका ज्ञान और आत्मिक समझ (1:9)

[9]इसी लिए जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिए यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ।

''इसीलिए जिस दिन से यह सुना है,

हम भी तुम्हारे लिए यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते'' (1:9)

अपने साथियों के साथ पौलुस कुलुस्सियों के लिए जब से इपफ्रास से उनके विश्वास, आशा और प्रेम का समाचार मिला था तभी से लगातार प्रार्थना करता था (1:3-8)। विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है, ''[इन गुणों को मिलाकर हम देखते हैं कि प्रेरित प्रार्थना करता है कि जिन लोगों को वह लिखता है वे] समझ, ज्ञान, सामर्थ, सहनशीलता, सहिष्णुता, आनन्द, धन्यवाद और प्रेम में बढ़ सकें।''[1]

इस भाग में पौलुस ने इन भाइयों को बताया कि उनके लिए की जाने वाली प्रार्थनाओं में कौन-कौन सी बातें हैं, जिसमें वहां की कलीसिया के और भी बढ़ने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की गई। मसीही लोगों को अपने साथी मसीहियों के लिए ऐसी ही विनतियां शामिल करके बढ़ावा देना चाहिए। (**प्रार्थना करने से नहीं चूकते** वाक्यांश के सम्बन्ध में, 1:3 पर चर्चा देखें)।

पौलुस ने अपनी प्रार्थनाओं में न केवल कुलुस्से के लोगों को शामिल किया बल्कि उसके अन्य पत्रों में भी यह स्पष्ट हो गया कि वह कई अन्य कलीसियाओं और मसीही लोगों के लिए प्रार्थना करता था।[2] दूसरों के लिए प्रार्थना करते हुए उसने विनती की कि कुलुस्से के लोग (4:3, 4) और अन्य लोग उसके लिए प्रार्थना करें।[3]

आयतें 9 से 14 की बातों से प्रार्थना करने वाले उन लोगों की कुछ निजी विशेषताएं पता चलती है: (1) परमेश्वर में विश्वास कि वह प्रार्थना का उत्तर देगा; (2) प्रार्थना का उत्तर देने की उसकी क्षमता में भरोसा; (3) उसके साथ निकट सम्बन्ध; (4) दूसरों के लिए दिलचस्पी, चिंता और प्रेम; (5) प्रार्थना में लगातार बने रहना; (6) विनतियों में स्पष्ट बातें कहना; (7) सकारात्मक व्यवहार; (8) सम्भावित विकासशील आत्मिक विकास में विश्वास; (9) आत्मिक आवश्यकताओं की चिंता; और (10) आत्मा की बुनियादी आवश्यकताओं की समझ।

कुलुस्सियों के लिए अपनी प्रार्थनाओं में पौलुस और उसके साथियों ने चार विनतियां की। पहले उन्होंने मांगा कि इन भाइयों को, ''आत्मिक ज्ञान,'' ''आत्मिक समझ,'' परमेश्वर की इच्छा की ''पहचान'' होने से *आत्मिक समझ* मिल सके (आयत 9)। दूसरा, उन्होंने उनके लिए प्रार्थना की कि वे योग्य चाल चल सकें, जिससे उनका जीवन ऐसा हो जो परमेश्वर को भाता हो और फलदायक है (आयत 10)। तीसरा, उन्होंने परमेश्वर से कुलुस्सियों को अपनी सामर्थ के साथ *आत्मिक सामर्थ* से मज़बूत करने को कहा (आयत 11)। चौथा, उन्होंने अपने भाइयों के लिए *धन्यवाद सहित आनन्द* पाने के लिए प्रार्थना की (आयतें 11घ, 12)। आइए इन चारों विनतियों को और निकटता से देखते हैं।

''कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ'' (1:9)

पौलुस चाहता था कि ये भाई **परमेश्वर की** इच्छा में **परिपूर्ण हो** (*plēroō*) जाएं। भविष्यद्वाणी के पूरा होने (मत्ती 1:22; 2:15), एक निश्चित समय के बीतने (मरकुस 1:15), और किसी गतिविधि और कार्य के पूरा होने (मत्ती 13:48; यूहन्ना 7:8) को व्यक्त करने के लिए *plēroō* के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल किया गया है। इस शब्द का अर्थ ज्ञान, समझ, आनन्द या शोक जैसे विशेष गुण के साथ इस शब्द का अर्थ देना भी है।[4]

पौलुस ने प्रार्थना की कि कुलुस्से के लोग परमेश्वर की इच्छा और आत्मिक समझ का पूर्ण दान पाने के कारण उसकी इच्छा से भर जाएं। उसकी इच्छा थी कि वे सम्पूर्ण आत्मिक ज्ञान यानी उसकी इच्छा की पूरी समझ से भर जाएं। परमेश्वर की सेवा बिना सही ज्ञान के नहीं हो सकती (रोमियों 10:1–3)।

ज्ञान के लिए यूनानी शब्द (*epignōsis*) का अर्थ जो कुछ सिखाया गया है उसे समझ से और अनुभव करते हुए सही ढंग से, पूर्ण रूप में और अच्छी तरह से जानना (देखें आयत 6)। इसमें *gnōsis* (2:3) से अधिक सम्पूर्ण ज्ञान की बात है, जो कि किसी बात को दिमागी तौर पर समझना है। यह शब्द संक्षिप्त धर्मशास्त्रीय जानकारी का सुझाव नहीं देता बल्कि एक संक्षिप्त अवधारणा की पूरी समझ देता है जिससे सीखा गया, समझा गया और अनुभव किया गया है। बाइबल के विचार से मिलाने पर इसका अर्थ यीशु की शिक्षा के अनुसार जीने के द्वारा परमेश्वर की इच्छा के अर्थ को गहराई से समझना है (देखें इब्रानियों 5:14)।

सुलैमान ने लिखा था कि यहोवा का भय ज्ञान का आरम्भ है (नीतिवचन 1:7; देखें 9:10)। ज्ञान जानकारी प्राप्त करने से आता है चाहे यह निर्देश, अवलोकन या अनुभव के द्वारा हो। समझ

ज्ञान के इस्तेमाल के द्वारा मिली समझ का परिणाम होता है। जब कोई समझ आने वाले शब्दों में उस बात को जो उसके मन में है किसी दूसरे पर प्रकट करता है तो ज्ञान बांटा जाता है। परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा अपने विचार प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट किए (इफिसियों 3:3-5)।

पौलुस और उसके साथियों ने कुलुस्सियों के लिए **आत्मिक ज्ञान** (*pneumatikē sophia*) और **समझ** (*sunesis*) के लिए भी प्रार्थना की। पवित्र शास्त्र में इन गुणों को अक्सर इकट्ठे बताया गया है (देखें निर्गमन 31:3; 35:31; व्यवस्थाविवरण 4:6; 2 इतिहास 1:10, 12) और नीतिवचन में इन्हें बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है (देखें 1:2; 2:2, 6; 3:13; 4:5, 7)।

''समझ'' ज्ञान के आधार पर ठोस निर्णय को बढ़ाने की योग्यता है। इस पत्र में पौलुस ने कहीं और ''समझ'' को शामिल किया है (1:28; 2:3; 3:16; 4:5)। तथ्यों की बौद्धिक जानकारी आवश्यक नहीं कि वह समझ हो। तथ्यों का ''ज्ञान'' आत्मिक समझ और पहचान से उपयोगी होना चाहिए। बिना व्यवहार और आत्मिक समझ के ज्ञान वह नहीं है जो परमेश्वर चाहता है। उसका प्रकाशन आत्मिक है (1 कुरिन्थियों 2:13), जो कि मानवीय स्रोत की समझ और पहचान से अलग है। संसार का ज्ञान (या फ़िलॉसफ़ी) परमेश्वर की दृष्टि में मूर्खता है (1 कुरिन्थियों 1:20)। पौलुस ने कुलुस्सियों के लिए चाहा कि उन्हें शारीरिक बातों के ज्ञान से बढ़कर मिले। उसकी चिंता यह थी कि उन्हें आत्मिक समझ मिले।

ईश्वरीय ज्ञान परमेश्वर के प्रकाशन के द्वारा मिलता है, जो कि बाइबल में पाया जाता है। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं (याकूब 1:5), अपने वचन को हमारे बढ़ने, और हमारे उसकी आज्ञाओं को मानने (भजन संहिता 19:7; 119:98) के द्वारा हमारी आत्मिक समझ को बढ़ाता है। **सारे** ''आत्मिक ज्ञान और समझ'' का मिलना परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा होता है और पूरी तरह से मानवीय गुण या प्रयास पर निर्भर नहीं है।

उनका मसीही चाल-चलन और फल देना (1:10)

[10]ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ।

''ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो'' (1:10)

कुलुस्सियों के लिए अपनी इच्छा जानने के लिए पौलुस ने चार वाक्यांशों का इस्तेमाल किया (1) ''तुम्हारा चाल चलन प्रभु के योग्य हो,'' (2) ''वह सब प्रकार से प्रसन्न हो,'' (3) ''तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे,'' और (4) ''परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ।''

पौलुस प्रार्थना कर रहा था कि उन्हें ज्ञान मिले, जिससे उनके लिए ऊपर दिए गए चारों गुणों को पाने की प्रार्थना के लिए उन्हें आत्मिक पहचान और समझ मिले। आत्मिक समझ से ऐसा जीवन बनना चाहिए, जिसमें यह आत्मिक खूबियां पाई जाती हों। अपने जटिल और दुष्ट संसार में कुलुस्से के लोगों को उस समझ की आवश्यकता थी जो आनन्दायक जीवन में बदल सकें और परमेश्वर को स्वीकार्य हो। सुलेमान ने विनती की थी कि परमेश्वर उसे ये गुण दे ताकि वह

इस्राएल पर समझदारी से शासन करने के लिए हो (2 इतिहास 1:10)।

चाल चलन से पौलुस के कहने का अर्थ शारीरिक चाल-चलन का अर्थ भक्तिपूर्ण जीवन अर्थात आत्मिक चाल चलन था। यीशु ने इस प्रकार का जीवन बिताने के लिए वर्णित करने के लिए जो परमेश्वर को भाता है, चाल चलन की आकृति का इस्तेमाल किया (यूहन्ना 8:12; 12:35)। परमेश्वर और उसकी इच्छा को समझकर मसीही लोगों को उससे प्रेम करना और उसकी आज्ञा मानना आना चाहिए (यूहन्ना 14:15), और इस प्रकार उसके योग्य चाल चलनी चाहिए।

पौलुस ने मसीही व्यक्ति के रूप में जीने के लिए आम तौर पर रूपक के रूप में ''चाल चलन'' का इस्तेमाल किया।[5] चाल चलन का अर्थ गतिविधि है। मसीही जीवन स्थिर जीवन नहीं है बल्कि इसमें यीशु की सेवा में निरन्तर गतिविधि होती रहती है। उसके चेलों को चलने और खड़ा होने की आज्ञा तो दी गई है,[6] पर बैठने की कभी नहीं।

''योग्य चाल चलन'' में काम करना पौलुस के लिए आवश्यक था। उसने लिखा, ''... मैं ... तुम से विनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे उसके योग्य चाल चलो'' (इफिसियों 4:1)। उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि मसीही लोग इस प्रकार से चल सकते हैं जैसे परमेश्वर या परमेश्वर के हक्कदार हो जाएं या परमेश्वर के दानों के योग्य हो जाएं। पौलुस की तरह यीशु के सब चेले जो कुछ भी हैं वह परमेश्वर के अनुग्रह से हैं (1 कुरिन्थियों 15:10)। जिन के जीवनों में परमेश्वर की महिमा की झलक मिलती है वे इस तरह चल रहे हैं जो **चाल चलन प्रभु के योग्य** हैं। एक राजनेता जो झूठ बोलता, छल करता और अपने पद के कर्त्तव्यों को पूरा नहीं कर पाता है, वह अपने पद के योग्य चाल नहीं चल रहा है। मसीही लोग जो वैसे चलने की कोशिश नहीं कर रहे हैं जैसे यीशु चलता था वे प्रभु के योग्य चाल नहीं चल रहे थे (1 यूहन्ना 2:6)। योग्य चाल चलते हुए जीने का विचार पौलुस द्वारा फिलिप्पियों 1:27 और 1 थिस्सलुनीकियों 2:12 में भी बताया गया था। (देखें 3 यूहन्ना 6.)

पौलुस प्रार्थना कर रहा था कि कुलुस्से के लोगों को ज्ञान मिले ताकि वे योग्य चाल चल सकें और प्रभु को भा सकें। परमेश्वर को भाने के लिए व्यक्ति के चलने से पहले उसकी इच्छा की समझ होनी आवश्यक है। जानकारी और गहरी समझ को जब तक व्यवहार में न लाया जाए तब तक वे बेकार हैं। पहले दी गई चार खूबियां परमेश्वर को ग्रहण योग्य चाल चलने के लिए कुलुस्सियों की सहायता कर सकती है। इन गुणों के साथ वे अपने जीवनों को यीशु के जैसे बनने के लिए आकार दे सकते थे।

''और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो'' (1:10)

प्रसन्न (*areskeia*) नये नियम में केवल यहां ही मिलता है। इसकी सहजातीय क्रिया *areskō* का इस्तेमाल सत्रह बार हुआ है और इसका अर्थ वहां परमेश्वर को भाने के बजाय मनुष्यों को भाने के लिए हुआ है।[7] रोमियों 15:1-3 संकेत देता है कि हमें यीशु के नमूने का पालन करते हुए, जिसका उद्देश्य अपने आपको प्रसन्न करना नहीं था, दूसरों को प्रसन्न करने की कोशिश करनी चाहिए। इसके बजाय उसने हमारी निन्दा अपने ऊपर ले ली।

केवल ज्ञान किसी काम का नहीं है। याकूब ने लिखा है, ''इसलिए जो कोई भलाई करना

जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है'' (याकूब 4:17)। आत्मिक समझ और पहचान पाने का उद्देश्य उन्हें जीवन की परिस्थिति में इस ढंग से लागू करना है जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला हो। बाइबल में पाए जाने वाले प्रकाशन के बिना कोई उसकी इच्छा को नहीं जान सकता है। इसका अर्थ यह है कि जब तक कोई बाइबल की शिक्षा को समझता नहीं है तब तक वह सब प्रकार से उसे प्रसन्न नहीं कर सकता। **सब प्रकार से** का अर्थ है कि पौलुस कुलुस्सियों को मसीही जीवन के हर पहलू को मानने और यीशु की किसी भी शिक्षा को नज़रअन्दाज करने का इच्छुक था। इसमें उनके जीवनों को उसके द्वारा बताई सच्चाई तक सीमित रहने, उसकी शिक्षा में न जोड़ने और न उसमें से निकालने का कोई प्रयास शामिल था।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वालों के लिए आवश्यक है कि कुछ सीमा तक, दूसरों को प्रसन्न करें। पौलुस गैर-मसीही लोगों पर अपने जीवन के पड़ सकने वाले प्रभाव पर केन्द्रित था; इसलिए वह सब लोगों के लिए सब कुछ बन जाता था (1 कुरिन्थियों 9:20-23)। उसने दूसरों को प्रसन्न करने की कोशिश की, न कि उन्हें नाराज़ करने की; फिर भी उसका मुख्य ध्यान परमेश्वर को प्रसन्न करना होता था। उसने मसीही लोगों को, जिस प्रकार से मसीह ने किया था वैसे ही उनके लाभ के लिए दूसरों को प्रसन्न करने को कहा।

पौलुस प्रार्थना कर रहा था कि कुलुस्से के भाई हर प्रकार से प्रभु को प्रसन्न करने वाले बन सकें। उसकी ताड़ना में हमारे लिए रूपरेखा है कि हम परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य कैसे हो सकते हैं।

''तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे'' (1:10)

कुलुस्से के भाइयों को यह समझाने के लिए कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए, पौलुस ने आयतें 10 से 12 में चार कृदंतों का इस्तेमाल किया: (1) **फल लगे**; (2) ''ज्ञान में बढ़ना'' (आयत 10); (3) ''धीरज और सहनशीलता पाना'' (आयत 11); और (4) ''पिता का धन्यवाद करना'' (आयत 12)।

''फल लगे'' मिश्रित शब्द *karpophorountes* है जो *karpos* ''फल,'' और *phoreō,* ''लाना'' का मेल है। पौलुस ने यहां और 1:6 में कुलुस्सियों में दो बार और रोमियों 7:4, 5 में दो और बार इस शब्द के रूपों का इस्तेमाल किया। मसीही लोगों का फल धर्मी जीवन होना चाहिए। बहुत फल लाने वालों के द्वारा परमेश्वर को महिमा मिलती है (यूहन्ना 15:8)।

जब हम में आत्मिक समझ होती है तो हमारे अन्दर भक्ति के गुण आ जाएंगे, जो सेवा करने वाले जीवनों में ले जाएंगे जो दूसरों की सहायता के लिए निकलते हैं और दूसरों को मसीह के पीछे चलने के लिए प्रभावित करते हैं। परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले लोग आत्मिक रूप में फल देने वाले लोग हैं।

दूसरों में दोष निकालना शायद फलदायक जवानों को बढ़ाने और **भले कामों** का फल देने से आसान है। उसके वचन का प्रचार करने वालों को अपने संदेश के निर्धन प्रतिनिधि नहीं होना चाहिए। सत्य और सुसमाचार की सुन्दरता को दिखाने का बेहतरीन ढंग इसे जीना है। जिया गया सरमन बेहतरीन ढंग से सुनाया गया सरमन है।

मसीही लोगों के रूप में हमें भले कामों में लगे होना आवश्यक है क्योंकि हम परमेश्वर की

कारीगरी हैं (इफिसियों 2:10)। वह उनके द्वारा सबसे अधिक प्रभावशाली ढंग से काम करता है जो अपनी आत्मिक क्षमता को बढ़ाकर उसकी निस्वार्थ सेवा करते हैं (फिलिप्पियों 2:12, 13)। भले कामों में चाहे उद्धार बनता या मिलता नहीं है (इफिसियों 2:8, 9), पर अनन्त जीवन पाने के लिए वे आवश्यक हैं (रोमियों 2:7)।

मसीही व्यक्ति का विश्वास भले कामों के द्वारा दिखाया जाता है (याकूब 2:17-26)। काम परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह मनुष्यजाति का न्याय उनके कामों के द्वारा करेगा (2 कुरिन्थियों 5:10; 1 पतरस 1:17; प्रकाशितवाक्य 20:11, 12)। वह उन्हें दण्ड देगा जिनके काम बुरे हैं (रोमियों 2:6-11)।

''और परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ'' (1:10)

आत्मिक समझ और पहचान पाने से मसीही लोगों को न केवल परमेश्वर की इच्छा की समझ मिलेगी बल्कि **परमेश्वर की पहचान** भी मिलेगी। परमेश्वर को जानना सबसे महत्वपूर्ण काम है। समझदार और मज़बूत लोगों को अपनी योग्यताओं और अपनी सामर्थ पर घमण्ड नहीं करना चाहिए; बल्कि उन्हें इस बात में आनन्दित होना चाहिए कि वे परमेश्वर को पहचानते और जानते हैं (यिर्मयाह 9:23, 24)। अनन्त जीवन परमेश्वर को जानने पर निर्भर है (यूहन्ना 17:3)। मसीह जब दोबारा आएगा तो वह जो परमेश्वर को नहीं जानते, अनन्त विनाश का बदला देगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8)।

''परमेश्वर की पहचान [*epignōsis*]'' में न केवल परमेश्वर का प्रकट किया गया ज्ञान बल्कि वह ज्ञान भी है, जो उसके साथ सम्बन्ध का अनुभव करके मिलता है (1:9 पर चर्चा देखें)। इसके अलावा यीशु के द्वारा (यूहन्ना 1:14, 18; 12:45; 14:9), उसकी दृष्टि में (भजन संहिता 19:1; रोमियों 1:20), बाइबल के उसके विवरणों के द्वारा, भक्त लोगों के जीवनों में और हमारी आराधना के द्वारा देखा और जाना जा सकता है।

उन की आत्मिक सामर्थ (1:11, 12क)

[11]और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको। [12]और पिता का धन्यवाद करते रहो।

''उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब
प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ'' (1:11)

कुलुस्सियों के लिए सामर्थ और **शक्ति** गहरी समझ से आनी थी जिससे उन्होंने परमेश्वर के योग्य चाल चलना था। चाहे वे अपना योगदान दे रहे थे पर परमेश्वर ने उन्हें बलवन्त करने के लिए अपना योगदान देना होना था। परमेश्वर अपनी ईश्वरीय सामर्थ के द्वारा जीवन की कठिनाइयों में से उभरने में सहायता देता है जो संसार की समस्याओं से कहीं बढ़कर है (1 यूहन्ना 4:4)। उसके पास देने के लिए एक असीमित भण्डार है। अनुवाद हुआ क्रिया शब्द **बलवन्त**

होते जाओ, एक वर्तमान कृदंत है, जिसका अर्थ बलवन्त या मज़बूत करने की एक बार की नहीं बल्कि लगातार मज़बूती की बात है जो परमेश्वर की अपनी सामर्थ से की जाती है।

यूनानी भाषा में संज्ञा शब्द *dunamei* और कृदंत *dunamoumenoi* (मूल में, ''और शक्ति के साथ शक्तिशाली किए गए'') की समरूपता को ''सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते'' अनुवाद से बाहर लाया जाता है, पौलुस शायद शब्दों का खेल खेलना चाहता था। मसीही लोगों को परमेश्वर की महिमा की शक्ति से सामर्थ दी जाती है। ''डायनामाइट'' शब्द यूनानी भाषा के *dunamis* से लिया गया है।

Dunamis, अपने आप में शक्ति और योग्यता और *exousia,* कार्य करने का अधिकार या शक्ति जिसका अनुवाद (''वश,'' 1:13; ''अधिकार'' और ''प्रधानताएं'' 1:16; 2:10, 15) में अन्तर किया जा सकता है। इसका उदाहरण तिजोरी खोलने की शक्ति या योग्यता (*dunamis*) वाला व्यक्ति है जिसे ऐसा करने का अधिकार (*exousia*) नहीं है।

सुसमाचार उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16)। जो लोग यीशु में विश्वास रखते हैं उन्हें परमेश्वर की संतान बनने की ''शक्ति,'' ''अधिकार,'' या ''योग्यता'' (*exousia*) दी गई है (यूहन्ना 1:12)। यीशु ने प्रेरितों को दुष्टात्माओं के ऊपर (लूका 9:1)। शक्ति या सामर्थ (*dunamis*) और अधिकार (*exousia*) का इस्तेमाल करने का अधिकार दिया।

परमेश्वर ने अपनी **महिमा की शक्ति के अनुसार** (*kratos,* ''शक्ति''; नये नियम में केवल परमेश्वर के लिए इस्तेमाल हुआ) मसीही लोगों को अधिकार दिया है। ऐसी ''शक्ति'' परमेश्वर में अपने आप में है। यही वह शक्ति है जिसने यीशु को जिलाया था (इफिसियों 1:19, 20)। उसकी ''महिमा की शक्ति'' प्रभु के लिए योग्य जीवन जीने में सहनशक्ति को बढ़ाने में मसीही लोगों की सहायता करती है।

''महिमा'' (*doxa*) की परमेश्वर की शक्ति आम तौर पर मनुष्य पर प्रकट की गई परमेश्वर की भयदायक शान और शक्ति को कहा जाता है। हम में से हर कोई परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियों 3:23)।

पौलुस ने इफिसियों को प्रभु में बलवन्त होते रहने (*endunamousthe*) के लिए समझाया (इफिसियों 6:10)। यह सामर्थ पवित्र आत्मा की सहायता से मिलती है (इफिसियों 3:16)। मसीही लोगों के भीतर होने और संसार से बड़ा होने के कारण आत्मा विश्वासियों को संसार पर जय पाने में सहायता करता है (1 यूहन्ना 4:4)।

''यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको'' (1:11)

परमेश्वर का अपनी शक्ति के साथ कुलुस्से के लोगों को बलवन्त करने का उद्देश्य उन्हें सहनशील, धीरजवंत और आनन्द करने वाले बनाना था। ए. टी. रॉबर्टसन ने **सहनशीलता** और **धीरज** पर इस प्रकार कहा है:

> धीरज [*hupomonēn,* जिसका अनुवाद ''सहनशीलता'' है] का अर्थ बिना कायरता

या निराशा के जैसे युद्ध के दौरान सिपाहियों को कहा जता है, ''आगे बढ़ना'' है, हार मानने की परीक्षा आने पर धीरज और सहनशीलता से लगे रहना; और धीरजवान [*makrothumian,* जिसका अनुवाद ''धीरज'' हुआ है] क्रोध, बदले, प्रतिकार का न होना, लम्बे समय तक बने रहना और बहुत हद तक सहन करना है। दोनों शब्द आम तौर पर एक-दूसरे का स्थान भरते और पूरक बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 6:4, 6; 2 तीमुथियुस 3:10; याकूब 5:10-11)।[8]

सहनशीलता वह गुण है, जो व्यक्ति को किसी लक्ष्य को पाने की चाह में दृढ़ बनाए रखता है, चाहे कितनी भी कठिनाइयों या परीक्षाओं का सामना करना पड़े। धीरज जीवन के कष्टों और तनावों के बावजूद सहने और सेवा करने की प्रेरणा देता है। जवाबी कार्यवाही एक स्वाभाविक बात है, परन्तु धीरज मसीही व्यक्ति को अधिक महत्वपूर्ण बातों पर अपनी ऊर्जा को दिखाकर बुराई करने वालों को बदला देने के लिए परमेश्वर की राह देखकर बदला लेने को एक और कर देता है (रोमियों 12:17, 19)।

हर प्रकार से वाक्यांश सहनशीलता और धीरज के साथ जुड़ा हुआ है, जो कुलुस्सियों के लिए लक्ष्य का संकेत देता है। उन्हें इन गुणों में परिपूर्णता या परिपक्वता की ओर जाने का प्रयास करना है। बढ़ने के लिए परमेश्वर की सहायता और अपने निजी प्रयासों से उन्होंने जीवन की कठिनाइयों पर काबू पाने के योग्य होना था और कठिन परिस्थिति का सामना होने पर अपने मसीही स्वभाव में बने रहना था।

एच. सी. जी. माउल का अवलोकन है, ''पवित्र लोगों'' की ईश्वरीय सामर्थ की परिपूर्णता से मुख्य रूप में 'कोई बड़ी बात करना' में नहीं बल्कि मन के स्वर्गीय आनन्द से सहना और धैर्य रखना है।''[9] परमेश्वर की चिंता मसीही लोगों को सहनशील बनाना है न कि बेजोड़ अभिनय करवाना।

मसीह में अपने भाइयों और बहनों के लिए पौलुस को जिस ''शक्ति'' की इच्छा थी वह उनके लिए मसीही लोगों के रूप में सहन करने की शक्ति थी न कि आश्चर्यकर्म करने की शक्ति, बेशक यीशु के सामर्थ के कामों की बात करते हुए ''चिह्नों'' या ''सामर्थ के काम'' अनुवाद किया गया है (मत्ती 11:20, 21, 23; 13:54)। सामर्थ के कामों अर्थात आश्चर्यकर्मों ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया, जो कि परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करना था। उन्होंने यीशु के मसीहा होने (यूहन्ना 20:30, 31; प्रेरितों 2:22), प्रेरितों के अधिकार (2 कुरिन्थियों 12:12), और प्रचार किए जा रहे वचन के परमेश्वर की ओर से होने (मरकुस 16:20; प्रेरितों 14:3; इब्रानियों 2:3, 4) पर मोहर कर दी। मसीही लोगों के लिए जय पाने और परमेश्वर के लिए प्रेम के कारण यीशु के लिए जयवंत जीवन जीने के लिए शक्ति आश्चर्यकर्म या चमत्कार करने से कहीं महत्वपूर्ण है (1 कुरिन्थियों 13:1-3)।

उनके जीवनों में परमेश्वर की शक्ति का उद्देश्य आश्चर्यकर्म करने के उद्देश्यों के लिए नहीं बताया गया था, परन्तु उनके आत्मिक लाभ के लिए बताया गया था। चाहे आश्चर्यकर्म परमेश्वर की ओर से मिली शक्ति के द्वारा किए जाते थे, पर ऐसी शक्ति केवल कुछ मसीही लोगों को ही मिलती थी (1 कुरिन्थियों 12:29, 30)। उस दुष्ट के साथ जो संसार में काम करता है लड़ने में

सहायता के लिए सब मसीही लोगों को शक्ति दी जाती है (1 यूहन्ना 4:4)। पवित्र आत्मा और परमेश्वर के आत्मिक हथियारों से मसीही लोगों को उस दुष्ट के विरोध का सामना करते हुए लड़ने के लिए आवश्यक सहायता दी जाती है (इफिसियों 6:10-18)।

आनन्द के साथ को सम्भवतया ''सहनशीलता और धीरज'' के साथ होने के बजाय (KJV; NKJV; RSV) ''धन्यवाद देने'' (आयत 12; NASB; NIV; NRSV) के साथ जोड़ा जाना चाहिए। मसीही लोगों को आनन्द से भरे होना चाहिए। हमारा आनन्द धर्मी जीवन से मिलना चाहिए, जो मसीह में आनन्द करने का कारण देता है (फिलिप्पियों 4:4)।

''पिता का धन्यवाद करते रहो'' (1:12)

पत्र के आरम्भ में सलाम लिखते हुए (1:3-8) पौलुस ने कहा था कि वह अपनी प्रार्थनाओं में कुलुस्से के लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता है (1:3 पर चर्चा देखें)। एक उदाहरण के रूप में अपने आपको देने के बाद उसने उन्हें धन्यवाद करने को कहा। सिखाने वाले को इस बात में नमूना बनना चाहिए कि वह क्या सिखाता है।

धन्यवाद पिता को लगातार और आनन्द से दिया जाना था (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:18) क्योंकि उसने इन मसीही लोगों को ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मिरास में साझी बनने के योग्य बना दिया था। पिता के रूप में परमेश्वर की बात करते हुए पौलुस ने कुलुस्सियों का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ जोड़ा। जैसे हम सब लोग, जिन्होंने विश्वास के द्वारा बपतिस्मा लिया है परमेश्वर की संतान हैं, वैसे ही वे उसकी संतान थे (गलातियों 3:26, 27)।

ज्योति के राज्य में उनका आना (1:12ख, 13)

[12ख]जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों। [13]उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।

''जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों'' (1:12)

पहले पौलुस ने भाइयों को [आत्मिक] **मीरास में सहभागी** होने के **योग्य** बताया। अनिश्चित भूतकाल कृदंत होने के कारण ''योग्य।'' परमेश्वर के हमें योग्य बनाने के पूरे कार्य को दिखाता है। इसका अनुवाद ''सक्षम, पर्याप्त, काफी, बनवाने'' के अर्थ वाले कारणवाचक क्रिया *hikanōsanti* का अनुवाद है। नये नियम में यह केवल एक और बार मिलता है, जहां इसका अनुवाद ''हमें पर्याप्त बनाया'' (2 कुरिन्थियों 3:6; NASB) या ''हमें योग्य बनाया'' (KJV) है। लोग परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा की गई मीरास के लिए अपने आप योग्य होने के लिए अपनी योग्यताओं से अयोग्य हैं। किसी दूसरे का काम अर्थात यीशु की योग्यता को सम्भव बनाता है। इस बड़ी आशीष के देने वाले परमेश्वर ने कुलुस्से के भाइयों को मीरास को पाने के योग्य बनाकर उन्हें यीशु के द्वारा योग्य बनाया था। यह मीरास स्वर्ग में घर है (1 पतरस 1:3, 4)। शुद्ध किए गए सब लोगों को स्वर्ग में स्थान मिलेगा; यह काम परमेश्वर के अनुग्रह के वचन के द्वारा

पूरा किया गया है (प्रेरितों 20:32)।

जो लोग अपने पापों में मरते हैं, वे यीशु के पास स्वर्ग में नहीं जा सकते (यूहन्ना 8:21)। कोई भी अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के स्वर्गीय नगर में नहीं जा सकती (प्रकाशितवाक्य 21:27)। जब तक पापियों को क्षमा नहीं किया जाता, वे ज्योति में पवित्र लोगों के साथ योग्य नहीं हो सकते। यीशु का लहू उनके पापों को मिटा देता है (1 यूहन्ना 1:7) जो उस में हैं (2 कुरिन्थियों 5:21; इफिसियों 1:7) यानी जो लोग विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर की संतान बन गए हैं (गलातियों 3:26, 27)। इस कारण वह पापियों को धर्मी बनाकर उन्हें यहां बताई गई मीरास को पाने के योग्य बनाता है।

यह मीरास सही-सही किसे मिलनी थी? *द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* के सुधरे हुए चौथे संस्करण में बड़े टैक्सचुअल अधिकारी के रूप में हमें एक स्थान पर (NASB) योग्य "तुम्हें" (NIV) द्वारा भी स्वीकार्य अलग रूप में इस्तेमाल किया है।[10] "तुम्हें" योग्य लोगों को कुलुस्सियों तक सीमित कर देगा, जबकि "हमें" में पौलुस और अन्य सभी मसीही लोगों के साथ-साथ वे भी शामिल होंगे। दोनों ही स्थितियों में अर्थ पर इतना प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि कुलुस्से के लोग सामान्य अर्थ में मसीही लोगों के प्रतिनिधि थे।

"सहभागी" के लिए यूनानी शब्द *merida* (*meris* का कर्मकारक एकवचन) आम तौर पर भूमि या अन्य सम्पत्तियों के भाग बांटने के संदर्भ में किया जाता है, जिन्हें भागों में विभाजित किया जा सकता है (लूका 10:42; प्रेरितों 8:21; 16:12)। "मीरास" (*klēros*) का मूल अर्थ कोई चिह्नित वस्तु या कोई ठहराई हुई राशि था। इसका इस्तेमाल "डाली जाने वाली चिट्ठियों" (मत्ती 27:35; मरकुस 15:24; लूका 23:34; यूहन्ना 19:24; प्रेरितों 1:26), सेवकाई में भाग या भूमिका होने (प्रेरितों 1:17), और आवंटन या मीरास के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है (प्रेरितों 26:18; 1 पतरस 5:3)।

नये नियम में प्रतिज्ञा की गई मीरास पहली वाचा में प्रतिज्ञा की गई मीरास से उत्तम है (इब्रानियों 8:6)। पुरानी वाचा (निर्गमन 32:13; गिनती 26:53) में मुख्यतया सांसारिक आशिषें और चीज़ें थीं (व्यवस्थाविवरण 5:32, 33)। नई वाचा में पहले राज्य की खोज करने वालों के लिए थोड़ी देर की देखभाल का वचन दिया गया है (मत्ती 6:33); परन्तु अधिक महत्वपूर्ण यह है कि आत्मिक और स्वर्गीय आशिषों का वचन दिया गया है (इफिसियों 1:3; 1 तीमुथियुस 4:8)। स्वर्ग को उनके द्वारा जिन्होंने नया जन्म पाया है मीरास के रूप में (1 पतरस 1:3, 4) ग्रहण किया जाता है। मीरास को आम तौर पर कमाया नहीं जाता। यह देने वाले की इच्छा के अनुसार दी जाती है और आम तौर पर लिखित वसीयत में दी जाती है। यही बात पहली वाचा में थी और यही दूसरी वाचा में है (इब्रानियों 9:15)। मानवीय परिवारों में आम तौर पर वारिस होते हैं, जिन्हें मीरास मिल जाती है।

मीरास उन्हीं को मिलेगी, जो परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमियों 8:16, 17; गलातियों 4:6, 7), क्योंकि स्वर्गीय मीरास को प्राप्त करने के योग्य केवल वही हैं। परमेश्वर की संतान बनने के लिए लोगों को जन्म (1 पतरस 1:3) और गोद लिया जाना (रोमियों 8:15; गलातियों 4:5; इफिसियों 1:5) के दोनों ढंग बताए गए हैं। परमेश्वर की संतान बनने के लिए नया जन्म आवश्यक है। यीशु ने समझाया कि यह जन्म जल और आत्मा से लिया जाता है (यूहन्ना 3:5)। आत्मा द्वारा प्रकट

किए गए वचन के द्वारा (यूहन्ना 6:63; 1 पतरस 1:23) जो विश्वास का आधार हैं (रोमियों 10:17) और बपतिस्मे के पानी के द्वारा लोगों को परमेश्वर के पुत्र बनाया जाता है (गलातियों 3:26, 27)। प्रेरितों 8:12 में एक उदाहरण दिया गया है: ''परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।''

जिन लोगों ने आत्मा के द्वारा प्रकट किए गए वचन के द्वारा नया जन्म लिया है (यूहन्ना 14:26) वे **पवित्र लोग** कहलाते हैं। इस शब्द के निष्क्रिय क्रिया रूप (*hagioi*) का अर्थ है ''पवित्र करना'' (*hagiazō*) पवित्र लोगों को वचन के द्वारा पवित्र किया जाता है (यूहन्ना 17:17) और **ज्योति** की संतान बनाया जाता है। यीशु के अनुयायी जगत की ज्योति हैं (मत्ती 5:14)। हम ज्योति हैं, क्योंकि हम ने उस से ज्योति पाई है, जो जगत की ज्योति है (यूहन्ना 3:21; 8:12)। ज्योति की संतान के रूप में (यूहन्ना 12:36; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:5) हम में जीवन की ज्योति (यूहन्ना 8:12)।

''ज्योति में पवित्र लोगों'' किन्हें कहा गया है? क्या वे संसार के लोग हैं या स्वर्गदूत। ''पवित्र लोगों'' के लिए किसी यूनानी शब्द का अनुवाद कई बार ''संत'' किया जाता है। इसका इस्तेमाल पुराने नियम के काल के दौरान परमेश्वर के लोगों के लिए (मत्ती 27:52), यीशु के अनुयायियों के लिए (प्रेरितों 9:13, 32; रोमियों 8:27; 12:13), या स्वर्गदूतों को कहा गया हो सकता है (मरकुस 8:38; लूका 9:26; प्रेरितों 10:22)। अधिक सम्भावना यही है कि पौलुस हर युग के उद्धार पाए हुए लोगों की बात कर रहा था, जिन्हें स्वर्गीय मीरास मिलेगी। इसमें वे लोग जिन्होंने व्यवस्था से पहले के काल के दौरान परमेश्वर का आदर किया, मूसा की व्यवस्था के काल के दौरान के यहूदी और अन्यजाति और मसीही युग के दौरान उद्धार पाए हुए लोग भी हैं। कुछ लोगों को जो मसीह के जी उठने से पहले रहते थे ''पवित्र लोग'' कहा गया है (मत्ती 27:52)। इस समूह में वे लोग होंगे, जिन्हें पहली वाचा के अधीन यीशु की मृत्यु के द्वारा छुड़ाया गया था (इब्रानियों 9:15)। इसमें वे अन्यजाति मसीही भी होंगे जो ''अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरे; कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो ... पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं'' (प्रेरितों 26:18)। ''पवित्र किए गए'' का अर्थ है ''अलग किए गए, पवित्र बनाए गए, संत बनाए गए।''

ज्योति अंधकार से उलट होती है। दोनों एक ही जगह पर नहीं हो सकते। ज्योति अंधकार को छिद्रा देती है। परमेश्वर में कोई अंधकार नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ज्योति है (1 यूहन्ना 1:5)।

''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर प्रवेश कराया'' (1:13)

यह कहते हुए कि मसीही लोगों को **अंधकार के वश से छुड़ा** लिया गया है, पौलुस ने ज्योति और अंधकार में अन्तर करना जारी रखा। ''छुड़ा'' (*hruomai*) का इस्तेमाल बुराई (मत्ती 6:13), शारीरिक मृत्यु (मत्ती 27:43; 2 कुरिन्थियों 1:10), पाप में मृत्यु (रोमियों 7:24), क्रोध के आने (1 थिस्सलुनीकियों 1:10), और परीक्षा (2 पतरस 2:9) से छुड़ाने के लिए इस्तेमाल किया गया था। इसका मूल अर्थ कैदियों को, जिन्हें बंदी बनाया गया हो छुड़ाना

है। ''हमें योग्य बनाया'' और ''हमें छुड़ाया'' एक ही समय की बात है। योग्य बनने में कुलुस्से के मसीही लोगों को छुड़ाया भी गया था। जो लोग मीरास पाने के योग्य हैं वे वही लोग हैं जिन्हें अंधकार के वश से छुड़ाया गया है।

आयतें 12 और 13 में बताए गए ''योग्य,'' ''छुड़ाए,'' ''प्रवेश कराया'' के कार्य उन का विवरण हैं जो यीशु के राज्य में प्रवेश करते हैं। यीशु उद्धारकर्त्ता है; उसके बिना कोई भी योग्य नहीं हो सकता या छुड़ाया नहीं जा सकता। लोग अपनी पापपूर्ण स्थिति से अपने आप नहीं बच सकते। यदि वे ऐसा कर सकते, तो यीशु को उन्हें बचाने के लिए आने की आवश्यकता नहीं थी। यीशु के द्वारा परमेश्वर उन्हें छुड़ाता है, जो विश्वास से यीशु की आज्ञा मानते हैं (इब्रानियों 5:9)।

आयत 13क में पौलुस ने अंधकार में रहने वालों को उन बंदियों से मिलाया जिन्हें किसी शत्रु द्वारा कब्जे में किया गया है। उन्होंने शत्रु को उन्हें बंदी बनाने और कैद करने दिया। परमेश्वर शैतान के गुलामों को उनकी गुलामी से निकालकर उन्हें अपने राज्य में ला सकता है।

पौलुस ने इस बात में कि परमेश्वर ने हमें ''अंधकार के वश से छुड़ाया'' अपने आपको भी शामिल किया। ''वश'' (*exousia*) वही शब्द है जिसका इस्तेमाल प्रेरितों 26:18 में हुआ है (1:11 पर चर्चा देखें)। ''अंधकार,'' ज्योति का विपरीत, पापपूर्ण बातों के लिए सब कुछ समेटने वाला शब्द है; यह ज्योति से मेल नहीं खाता। पौलुस ने लिखा है:

> अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे (2 कुरिन्थियों 6:14-16)।

अंधकार में ज्योति नहीं है और यह ज्योति का उलट है। परमेश्वर अंधकार में नहीं, ज्योति में वास करता है (1 तीमुथियुस 6:16)। अंधकार का वश पाप (यूहन्ना 3:19), धोखे (2 कुरिन्थियों 11:13-15), और अज्ञानता (इफिसियों 4:18)। का क्षेत्र है। इस क्षेत्र पर शैतान का राज है; वह उन्हें जो सुसमाचार को नहीं मानते हैं, अंधा कर देता है ताकि सुसमाचार की ज्योति उन पर न चमक पाए (2 कुरिन्थियों 4:4)। जो लोग मसीही नहीं हैं अंधकार में रहते हैं (इफिसियों 5:8) परन्तु अंधकार की उन पर शक्ति केवल तब तक है, जब तक वे इसे अनुमति देते हैं। मसीही लोग अंधकार में नहीं हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:4) , और उन्हें अंधकार के कामों के साथ संगति न करने को कहा गया है।

इस संसार का हाकिम और ईश्वर शैतान (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11; 2 कुरिन्थियों 4:4), अंधकार के अपने इलाके के लोगों पर नियन्त्रण करता है, वे संसार की बुराई के सभी तत्वों के साथ (1 यूहन्ना 5:19), अंधकार की शक्ति के अधीन हैं (लूका 22:53)। यीशु ने कहा, ''जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है'' (यूहन्ना 8:34)। यूनानी भाषा में वर्तमान कृदंत ''करता है'' निरन्तर कार्य का संकेत देता है। पाप करता रहने वाला व्यक्ति पाप का दास बन जाता है।

पौलुस ने इसे इस प्रकार से कहा है:

> क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है? (रोमियों 6:16)।

पतरस ने इसी विचार को व्यक्त किया: ''... क्योंकि जो व्यक्ति जिस से हार गया है, वह उसका दास बन जाता है'' (2 पतरस 2:19)। पाप और शैतान के अधीन होकर लोग उसकी इच्छा पूरी करने के लिए उसके कब्जे में आ जाते हैं (2 तीमुथियुस 2:26)।

रोमियों में पौलुस ने यह समझाते हुए कि पापी लोग ''पाप के हाथ बिके हुए'' हैं, पाप के दमनकारी प्रभाव के विषय में लिखा (7:14)। वे ''जो चाहते हैं'' उसे ''नहीं करते'' बल्कि वही करते हैं, जिससे वे ''घृणा'' करते हैं (7:15)। उनके जीवनों में नियन्त्रण करने वाली बात है, उनके अन्दर का ''पाप जो [उन में] बसा हुआ है'' (7:20)। यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर पाप के कब्जे में फंसे लोगों को शैतानी शक्तियों और आत्मिक मृत्यु से निकाल लेता है (7:24, 25)। वह उन्हें अंधकार के वश, शैतान के राज्य से निकालकर उन्हें ज्योति के शासन, यीशु के राज्य में ले जाता है।

मसीही लोगों की लड़ाई अंधकार के हाकिमों, शक्तियों और सेनाओं से है (इफिसियों 6:12)। हम अब अंधकार के कामों में नहीं लगे हुए हैं (इफिसियों 5:11)। इसके बजाय हमें अंधकार के कामों को उतार फैंक कर ज्योति के हथियार को पहन लेना आवश्यक है (रोमियों 13:12)। परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने के लिए हमें अंधकार में नहीं बल्कि ज्योति में चलना आवश्यक है, क्योंकि परमेश्वर में कोई अंधकार नहीं (1 यूहन्ना 1:5-7)। ज्योति के बजाय अंधकार से प्रेम रखने वालों के काम बुरे होते हैं (यूहन्ना 3:19)। न्याय के दिन यीशु अंधकार के छुपे हुए कामों को ज्योति में लाएगा (1 कुरिन्थियों 4:5)।

यीशु ने पौलुस को बताया कि वह उसे अन्यजातियों के पास भेज रहा है, ''कि तू उन की आंखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें'' (प्रेरितों 26:18)। जिन की आंखें खुल जाती हैं वे ''पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास'' मिलेगी (प्रेरितों 26:18)। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के सरमन के अनुसार विश्वासियों को तब क्षमा किया गया था जब उन्होंने मन फिराकर बपतिस्मा लिया था (प्रेरितों 2:38)। जब जल और आत्मा से जन्म लेकर किसी के पाप क्षमा होते हैं (यूहन्ना 3:5), तो वह परमेश्वर के राज्य में आ जाता है। यही वह पल होता है जब व्यक्ति अंधकार के वश में से निकलकर ज्योति के क्षेत्र में प्रवेश करता है।

मसीही लोगों के सम्बन्ध में पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो'' (इफिसियों 5:8); ''क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:5)। पतरस ने भी अंधकार बनाम ज्योति के रूपक का इस्तेमाल किया। उसने लिखा कि परमेश्वर ने ''तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके

गुण प्रगट करो। तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है'' (1 पतरस 2:9ख, 10)।

''हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (1:13)

मसीही लोगों को एक और आशीष मिली है वह यह है कि परमेश्वर ने **हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।** ''प्रवेश कराना'' (*methistēmi*) का अर्थ एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाना या अलग विचार को मानने के लिए मनाना है। खोए हुए लोग शैतान की संतान हैं (मत्ती 13:38; 1 यूहन्ना 3:8, 10) और वे उसकी इच्छा पूरी करने के लिए उसके वश में हैं (यूहन्ना 8:44; 2 तीमुथियुस 2:26)। परन्तु उन्हें उसके वश में से लेकर यीशु के राज्य के लोगों के रूप में उसके अधीन किया जा सकता है। यीशु के द्वारा मसीही लोगों को अंधकार से प्रभुता करने वाले क्षेत्र से निकालकर परमेश्वर द्वारा मसीही लोगों को मसीह के राज्य में पहुंचाया जाता है।

पिता ने कुलुस्सियों को शत्रु अर्थात शैतान की शक्ति से निकालकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में पहुंचा दिया था। यूनानी भाषा में ''छुड़ाकर'' और ''प्रवेश कराया'' दोनों ही अनिश्चित भूतकाल कृदंत में हैं। क्योंकि इन मसीही लोगों के लिए छुड़ाने और प्रवेश कराने का काम अतीत में हो चुका था। पौलुस ने अपने आपको उन लोगों के साथ मिलाया जिन्हें प्रवेश कराया गया था। जे. बी. लाइटफुट ने सुझाव दिया है कि यह तब हुआ ''जब उन्होंने बपतिस्मा लिया था अर्थात जब उन्होंने मसीह को ग्रहण किया।''[11]

पिता और पुत्र के सम्बन्ध का चित्रण ''अपने प्रिय पुत्र'' के अगले शब्दों (*ho huios tēs agapēs autou*)। मूल में इसका अर्थ ''उसके प्रेम का पुत्र'' है। उनके बीच सम्बन्ध प्रेम का है। यीशु के बपतिस्मे के समय पर परमेश्वर ने स्वयं से यह कहते हुए बात की थी, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है'' (मत्ती 3:17)। पहाड़ पर जब यीशु का रूपांतर हुआ था तब पतरस, याकूब और यूहन्ना के सामने परमेश्वर ने इसी बात को दोहराया था (मत्ती 17:5)। यीशु ने बताया कि पिता उससे प्रेम करता है (यूहन्ना 3:35; 5:20; 10:17; 15:9; 17:23, 24, 26) और वह पिता के प्रेम में बना रहा क्योंकि वह पिता की आज्ञा मानता था (यूहन्ना 15:10)। यीशु परमेश्वर के प्रेम की केवल चीज़ नहीं है बल्कि वह खोई हुई मनुष्यजाति के लिए उसके अपने प्रेम की अभिव्यक्ति भी है। परमेश्वर ने अपने प्रेम की महानता को दिखाने के लिए अपना ही इकलौता पुत्र दे दिया (यूहन्ना 3:16)। यीशु ने पिता के लिए अपने प्रेम को वैसे ही करके दिखाया ''जिस तरह पिता ने आज्ञा दी'' (यूहन्ना 14:31)।

''अपने राज्य में,'' ''में'' यूनानी शब्द *eis* है जिसका अर्थ है ''से।'' कुलुस्सियों को अंधकार के वश ''से'' (*ex*) जिसका अर्थ ''में से'' है। छुड़ाया गया था और यीशु के राज्य ''में'' पहुंचाया गया था, जिससे उन्हें उसके स्वर्गीय राज्य के लोग बनाया गया (फिलिप्पियों 3:20)। इस पत्र के लिखे जाने के समय उसका राज्य एक वर्तमान वास्तविकता था। जो लोग यीशु के राज्य के भविष्य में किसी समय आने की उम्मीद करते हैं वे उसके राज्य के स्वभाव और परमेश्वर की समयसारिणी को नहीं समझते हैं। जल और आत्मा से जन्म लेने वाले सब लोगों की तरह (यूहन्ना 3:5) कुलुस्से के लोगों को भी शैतान के वश से निकालकर यीशु मसीह के

राज्य में प्रवेश कराया गया था। वे ऐसे राज्य में थे, जिसका *अस्तित्व* था।

मसीह के राज्य को ''मसीह और परमेश्वर का राज्य'' कहा गया है (इफिसियों 5:5)। यह सही है क्योंकि मसीह का राज्य ही ''स्वर्ग का राज्य'' (मत्ती 3:2) या ''परमेश्वर का राज्य'' है (मरकुस 4:11)। यही वह राज्य है जिसके बारे में प्रचार किया गया था कि यह ''निकट आया है'' (मत्ती 3:2; 4:17), वही राज्य जो पहले ही ''निकट आ पहुंचा'' (लूका 10:9)। यीशु ने कहा, ''मेरा राज्य इस संसार का नहीं; ... मेरा राज्य यहां का नहीं'' (यूहन्ना 18:36)। इस बात से यीशु का अभिप्राय था कि उसका राज्य एक सांसारिक, भौतिक राज्य के रूप में नहीं बनना था। रॉबर्ट जी. ब्रेचर ने और यूजीन ए. निडा ने लिखा है, ''*उसके प्रिय पुत्र के राज्य* को भौगोलिक स्थान के रूप में नहीं, बल्कि 'शासन' या 'अधिकार के क्षेत्र' के रूप में समझा जाना चाहिए।''[12]

मसीह में उनकी और हमारी क्षमा (1:14)

[14]जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

''जिस में हमें छुटकारा मिला है'' (1:14)

पौलुस ने आयत 13 में आरम्भ किए छुटकारे के अपने रूपक को जारी रखा। पौलुस के साथ कुलुस्सियों को भी आत्मिक गुलामी से छुड़ाकर मुक्त किया गया था। छुटकारे का परिणाम यह हुआ कि पापों की क्षमा उनको मिलती है जो मसीह यीशु में हैं, जो **छुटकारा** दिलाने वाला अकेला है।

माउल का यह मूल्यांकन सही है:

> आयत 13 छोड़ने से पहले ''उसी में '' वाक्यांश पर ध्यान दें, न कि ''उसी के द्वारा'' पर। इसका अर्थ यह हुआ कि विचार मसीह के साथ एकता का दिया गया है। ... छुड़ाने वाले के मर रहे काम के द्वारा जीती गई क्षमा उन लोगों के लिए है जो विश्वास के द्वारा छुटकारा दिलाने वाले के रहस्यमयी व्यक्तित्व में समा गए हैं।[13]

कुलुस्से के लोग सब मसीही लोगों की तरह बपतिस्मा लेने के समय मसीह में आए थे। यीशु में होना आवश्यक है क्योंकि हर आत्मिक आशीष उसी में है (इफिसियों 1:3)। ''छुटकारा'' (*apolutrōsis*) का अर्थ गुलाम या बंदी को आजाद कराने के लिए फिरौती देकर छुड़ाना नहीं है। बल्कि यह उसके लिए छुटकारा दिलाने के परिणाम पर ज़ोर देता है जो गुलाम था। ब्रेचर और निडा ने लिखा है, ''जैसा कई बार सुझाव दिया जाता है, यहां यूनानी शब्द *apolutrosis* में बंदी को आज़ाद करने के लिए किसी को फिरौती देने का कोई विचार नहीं है, यह आज़ादी के कार्य के परिणाम पर ज़ोर देता है।''[14]

क्रूस पर अपनी मृत्यु और अपने लहू बहाए जाने के द्वारा (1 पतरस 1:18, 19), यीशु ने पाप से आज़ादी दी (रोमियों 6:23)। उसने कुलुस्सियों को गुलामी (यूहन्ना 8:34; रोमियों 6:16), दोष और पाप के दण्ड (यूहन्ना 8:36; गलातियों 5:1) से छुड़ाया था। ऐसा उसके लहू बहाए जाने के कारण सम्भव हुआ (प्रेरितों 20:28)। एफ. एफ. ब्रूस ने लिखा है, ''मसीह द्वारा

एक ही बार सदा के लिए अपने लोगों के लिए छुटकारा उपलब्ध करवा दिया गया था, परन्तु इसे उन्हीं लोगों द्वारा ग्रहण किया जाता है जो विश्वास के द्वारा उसके साथ मिलते हैं।''[15]

कुछ अनुवादों में ''उसके लहू के द्वारा'' (KJV; NKJV) है। यह विचार चाहे सही है पर यह वाक्यांश प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं मिलता।

''पापों की क्षमा'' (1:14)

आयत 14 में पौलुस ने जिस अन्तिम आशीष की बात की, वह छुटकारा है। **क्षमा** शब्द के विचार को दोहराते और समझाते हुए, यह ''छुटकारा'' का विरोधी है। छुटकारा और क्षमा का अर्थ आत्मिक स्वतन्त्रता, छुड़ाया जाना और पाप से मुक्ति है। यह उन लोगों को दी गई, जो मसीह में हैं, ये बड़ी आशिषें छुटकारे के उनके काम के द्वारा सम्भव हो पाई थीं। बिना लहू बहाए क्षमा होती ही नहीं है (इब्रानियों 9:22)। यीशु के लहू से पाप क्षमा किए जाते हैं (मत्ती 26:28) और धोए जाते हैं (1 यूहन्ना 1:7; प्रकाशितवाक्य 1:5)। क्षमा इसलिए दी गई है ताकि क्षमा ''उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है अपने अनुग्रह का असीम धन'' दिखाने के कारण दी गई है (इफिसियों 2:7)। वह अनुग्रह जिससे क्षमा मिलती है, उसे मानवीय प्रयास के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता (इफिसियों 2:8, 9)। इसे पाने के इच्छुक लोगों के लिए यीशु में होना आवश्यक है (इफिसियों 4:32)। बपतिस्मे का फल वह समय होता है जब कोई मसीह में प्रवेश करता है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26, 27) और जब उसे वह अनुग्रह और क्षमा मिलती है जो मसीह में है (2 तीमुथियुस 2:1)।

अजीब लग सकता है, परन्तु ''क्षमा'' (*aphesis*) केवल पौलुस के लेखों में यहीं और थोड़ा इफिसियों 1:7 के समानांतर वचन में मिलता है। लूका ने लिखा कि पौलुस ने भी पिसिदिया के अन्ताकिया में अपने प्रचार में इसका इस्तेमाल किया (प्रेरितों 13:38)।

यीशु की बात को दोहराते हुए कि उसका लहू पापों की क्षमा के निमित्त बताया जाता है मत्ती ने ''क्षमा'' का इस्तेमाल किया (मत्ती 26:28)। मरकुस ने लिखा कि यूहन्ना पाप क्षमा के बपतिस्मे का प्रचार करता था (मरकुस 1:4; लूका 3:3 भी देखें)। यीशु ने समझाया कि पवित्र आत्मा के विरुद्ध कही गई बात की कभी क्षमा नहीं होगी (मरकुस 3:29)। लूका के अनुसार जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की थी कि यीशु ने पापों की क्षमा के द्वारा उद्धार का ज्ञान देना था (लूका 1:67, 77)। यीशु ने यह भविष्यद्वाणी करते हुए कि वह बन्दियों को ''छुड़ाएगा'' और ''मुक्त करे'' गा (लूका 4:18)। पुराने नियम के इस हवाले को पढ़ा और अपने ऊपर लागू किया। उसने कहा कि पापों की क्षमा का प्रचार पहले यरूशलेम में होगा (लूका 24:47)। शब्द ''क्षमा'' यूहन्ना की पुस्तक में नहीं मिलता है। प्रेरितों की पुस्तक में दोहराए गए हर सरमन में पापों की क्षमा का विचार आ जाता है (प्रेरितों 2:38; 5:31; 10:43; 13:38; 24:47)। इब्रानियों की पुस्तक लहू के बहाए जाने की आवश्यकता पर ज़ोर देती है ताकि पाप क्षमा किए जा सकें (इब्रानियों 9:22; 10:18)।

1:12ख–14 में छह सच्चाइयों का संकेत मिलता है:

1. खोए हुए लोग अंधकार में, शैतान की शक्ति के वश में हैं।

2. उन्हें अंधकार में से निकालकर ज्योति में पहुंचाया जा सकता है।
3. उनके पाप क्षमा होने पर उन्हें अंधकार और शैतान के कब्जे से छुड़ाया जाता है।
4. पापों की क्षमा तब मिलती है, जब वे विश्वास करते, मन फिराते और बपतिस्मा लेते हैं।
5. जब वे ऐसा करते हैं, तो वे मसीही बन जाते हैं और परमेश्वर उन्हें उसके प्रिय पुत्र के राज्य में पहुंचाता है।
6. यह पहुंचाया जाना शैतान की शक्ति से लेकर ज्योति की संतान में जाना है।

पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा तब होता है जब खोए हुओं को अंधकार में से निकाला जाता है, परमेश्वर के लोग होने से नहीं, और दया के बिना रहने के लिए नहीं। वे ज्योति में जाने लगते हैं, परमेश्वर के लोग बनकर और दया के पाने वाले बनकर।

और अध्ययन के लिए

मसीह का राज्य (1:13)

राज्य के सम्बन्ध में यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि मसीह परमेश्वर के लोगों पर शासन करेगा, जैसे दाऊद ने किया था (यशायाह 9:6, 7)। स्वर्गदूत जिब्राइल जिसने मरियम को दर्शन दिया था, यह कहते हुए इसी आयत का संकेत दिया, ''प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा'' (लूका 1:32)। मीका ने भविष्यद्वाणी की कि हाकिम दाऊद के नगर बैतलहम से आएगा (मीका 5:2; देखें लूका 2:4)।

नबूकदनेस्सर के स्वप्न का विषय भी राज्य था, जिसका अर्थ दानिय्येल द्वारा बताया गया था। स्वप्न में यह प्रकट किया गया कि मसीह का राज्य, परमेश्वर का राज्य रोमी राजाओं के दिनों में स्थापित किया जाना था (दानिय्येल 2:31-44)। यहूदी लोगों को इस समयसारिणी की समझ थी और वे ''आस लगाए हुए थे'' (लूका 3:15)। जब यूहन्ना ने आकर प्रचार किया कि स्वर्ग का राज्य निकट आया है (मत्ती 3:1, 2)।

यीशु ने यह कहते हुए कि ''समय पूरा हुआ है'' (मरकुस 1:15) अपनी सेवकाई इसी संदेश के साथ आरम्भ की (मत्ती 4:17)। राज्य के आने की प्रतीक्षा का समय पूरा हो चुका था और इसकी स्थापना अब होने वाली थी। यीशु ने राज्य के निकट आने के सम्बन्ध में यही संदेश सुनाने के लिए (लूका 10:9, 11), प्रेरितों को (मत्ती 10:5, 7) और सत्तर और लोगों को भेजा। जो लोग यीशु के बातें करते समय वहां थे उनमें से कुछ लोगों ने राज्य को सामर्थ के साथ आया हुआ देख पाना था (मरकुस 9:1)। वह सामर्थ पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2:1-4) पवित्र आत्मा के साथ आई (प्रेरितों 1:8)। तब यीशु का राज्य पृथ्वी में फैल गया था, और अब उसके ''निकट'' होने का प्रचार नहीं किया जाता था। इसके बजाय राज्य का प्रचार किए जाने पर लोग इसमें आने के लिए बपतिस्मा लेते थे। (प्रेरितों 8:12 से यूहन्ना 3:3-5 की तुलना करें।) उसके बाद से आरम्भिक प्रचारकों के संदेश में संकेत होता था कि राज्य आ चुका है (प्रेरितों 19:8; 20:25; 28:23, 31)।

मसीह के शासन का आरम्भ हो गया, जब वह पिता के दाहिने हाथ ऊपर उठा लिया गया (इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 3:22; देखें दानिय्येल 7:13, 14)। स्वर्ग और पृथ्वी में अब सारा अधिकार उसका है (मत्ती 28:18), क्योंकि स्वर्गीय पिता को छोड़ और सब चीज़ें उसके अधीन कर दी गई हैं (1 कुरिन्थियों 15:27)।

यीशु ने यह समझाने के लिए कि वह उस धनवान की तरह है जो अपने राज्य को पाने के लिए दूर जाता है, एक दृष्टांत बताया (लूका 19:12)। उसका लौटकर आना अपने राज्य को स्थापित करने के लिए नहीं होना था क्योंकि अपनी वापसी से पहले ही उससे ये मिल गया होना था। उसे अपनी प्रजा के लोगों को उनके जीने के ढंग का हिसाब देना था (लूका 19:13-27)। इससे समझ आता है कि वह ''युग के अन्त'' में अपनी वापसी के समय संसार का न्याय करेगा (मत्ती 13:49; 25:31-46)। तब वह राज्य को पिता को लौटा देगा (1 कुरिन्थियों 15:23, 24)।

कुछ लोगों ने इस राज्य विचार को बढ़ावा दिया है कि राज्य अभी आया नहीं था, परन्तु कुलुस्सियों ने आने वाले का स्वाद चखा था। ब्रूस ने लिखा है:

> यह पुष्टि करके कि विश्वासियों को पहले ही परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में पहुंचा दिया गया है, पौलुस हमें सचमुच के मिल चुके युगांत विज्ञान का उदाहरण दे देता है। जो उनके आगे अपनी पूर्णता में होने वाला है उन में पहले ही पूर्ण हो चुका है। ... एक अनुमान के द्वारा जो एक वास्तविक अनुभव है न कि कानूनी कल्पना, उन्होंने उस महिमा को यहीं और अभी पा लिया है जो अभी प्रकट होने वाली है। ''ज्योति में पवित्र लोगों की मीरास'' को अभी अपनी असीम समृद्धि में नहीं परन्तु ईश्वरीय कार्य में दिखाया गया है जिसके द्वारा विश्वासियों ने इसे अनुभव किया है क्योंकि यह पहले ही हो चुकी है। ... मसीह के काम में यह संसार में पहले ही आ चुकी है (*तुलना* मत्ती 12:28; लूका 11:20); एक दिन यह महिमा की पूर्णता में आएगी जो मयीह के ***parousia*** [द्वितीय आगमन] को निवेष करती है।[16]

यह यीशु के राज्य की प्रकृति और इसकी स्थापना के समय की नासमझी है। इसके अलावा यह यूनानी शब्द ***eis*** का दुरुपयोग है जिसका अर्थ ''में'' है और 1:13 के कई अन्य अनुवादों में इसका अनुवाद यहीं हुआ है (KJV; NKJV; NIV और NRSV सहित)। उसका राज्य एक वर्तमान वास्तविकता बन गया था, जैसा कि इस तथ्य में देखा जाता है कि कुलुस्सियों को इसमें पहुंचाया गया था। यीशु के विश्वासयोग्य लोग उसके राज्य में तब तक बने रहेंगे जब तक वह दोबारा नहीं आता। मसीही लोग अब यीशु के राज्य के अन्दर याजक हैं (प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)। वे ज्योति में पवित्र लोगों की मीरास अर्थात उस मीरास को, जिसमें अभी उन्होंने जाना है, पाने के योग्य ठहराए गए हैं।

प्रासंगिकता

भाइयों के लिए पौलुस की प्रार्थना (1:9-11)

भाइयों के लिए पौलुस की एक विनती यह थी कि वे ज्ञान में परिपूर्ण हो जाएं (1:9)। हम आत्मिक समझ और पहचान की खोज करते हैं जो केवल परमेश्वर के प्रकट वचन में पाई जा सकती है। हमारे आज के जानकारी युग में, कम्प्यूटर और मीडिया ऐसे विचारों को देते हैं जो परमेश्वर की संतान के लिए हानिकारक होते हैं। मसीही लोगों को चाहिए कि एक दूसरे के परमेश्वर के ज्ञान, उसके वचन और संसार की किसी भी भटकन के बजाय धार्मिकता से भर जाने के लिए प्रार्थना करें।

पौलुस द्वारा की गई एक और विनती थी कि उसके साथी मसीही योग्य चाल चल सकें (1:10)। जानने के लिए जानकारी परमेश्वर की नज़र में काफ़ी नहीं है। जो लोग जानते हैं परन्तु *करते* नहीं हैं वे पाप कर रहे हैं (याकूब 4:17)। जानकारी व्यवहार में लाए बिना किसी काम की नहीं? लोगों को चोटें और मृत्यु उन ड्राइवरों के द्वारा दी जाती हैं, जिन्हें गाड़ी चलाने के लिए सुरक्षा चेतावनियों का पता तो था, परन्तु जो उन्हें पता था उसे उन्होंने व्यवहार में नहीं लाया। आत्मिक ज्ञान पाने का उद्देश्य यह है कि हम अपने जीवनों में अगुआई कर सकें ताकि हम वह करें जो परमेश्वर को भाता है और हर भले काम के लिए फलदायक हों।

पौलुस ने यह भी प्रार्थना की कि भाई बलवंत बनें (1:11)। एक छोटा लड़का भारी कुर्सी को हिलाने की कोशिश कर रहा है, परन्तु हिला नहीं पा रहा था। उसके पिता ने कहा, ''बेटा, मैं तुम्हारी सहायता करता हूं।'' मिलकर दोनों ने कुर्सी को हटा दिया। इसी प्रकार से हम परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर होते हैं। एक हाथी के साथ झूलते हुए पुल को पार करने के बाद चूहे ने कहा, ''हम ने सचमुच में उस पुल को हिला दिया!'' हम मसीह के लिए बड़े-बड़े काम कर सकते हैं, यदि हम उसे अपने द्वारा काम करने दें (फिलिप्पियों 2:13)।

पौलुस की नजर में वह बड़े-बड़े काम करने की इच्छा रखने वाला एक कमज़ोर व्यक्ति था। उसने लिखा, ''जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं'' (2 कुरिन्थियों 12:10)। यह सही था, क्योंकि अपनी कमज़ोरी को पहचानने के कारण ही वह परमेश्वर से सहायता मांग पाया वह लिख पाया, ''जो मुझे सामर्थ देता है, उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। हमारा मसीही परिश्रम न तो *सारा* हम हैं और न ही सारा *परमेश्वर।* यह सहयोग से किया गया प्रयास है। ''हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं'' (1 कुरिन्थियों 3:9)।

इसके अलावा पौलुस ने प्रार्थना की कि भाई सहनशील बनें (1:11)। गर्मी में एक दिन दो लड़कों को कहा गया कि बाग से घासफूस निकालने के लिए उन्हें पैसे दिए जाएंगे। थोड़ी देर तक झुलसा देने वाली गर्मी में काम करने के बाद उन्होंने फैसला किया कि वे तैरने को जाएंगे। घासफूस निकालना बन्द करके उन्होंने अपने काम को ईमानदारी से पूरा नहीं किया। वे सहनशील नहीं थे, जिस कारण उन्हें उनका प्रतिफल नहीं दिया गया। सहनशील होने का अर्थ उस में जिसकी उम्मीद हो, ईमानदारी से बने रहना है चाहे जितनी भी परेशानियां आ जाएं। यीशु ने बताया कि राज्य के कुछ लोग किस प्रकार से परीक्षाओं और कठिनाइयों के कारण ठोकर खाएंगे (मरकुस 4:17-19)।

परमेश्वर के बालकों के रूप में हमें प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है। हो सकता है कि हमें भी आत्मिक समझ की, योग्य चाल चलने की, परमेश्वर की सामर्थ से बलवंत होने की और उसके साथ अपने विश्वास और सफ़र में सहनशील होने की आशीष मिली हो।

आत्मिक आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना (1:9)

पौलुस ने प्रार्थना की कि कुलुस्से के लोगों की आत्मिक आवश्यकताएं पूरी हों। ये आवश्यकताएं ज्ञान, समझ और पहचान ही थीं। पौलुस चाहता था कि उनके पास ये गुण हों ताकि वे परमेश्वर के सामने योग्य चाल चलकर हर भले काम के लिए फल ला सकें। इस प्रकार से वे परमेश्वर के ज्ञान में बढ़कर उसकी महिमामय शक्ति से बलवंत होकर सहनशील, धीरजवान और आनन्दित हो सकते थे।

ज्ञान, समझ और पहचान में मिलती-जुलती बातें ही हैं। ज्ञान समझ और पहचान की गारंटी नहीं देता, परन्तु बिना ज्ञान के कोई समझदारी से या पहचान का काम नहीं कर सकता।

(1) परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान शब्दों के द्वारा परमेश्वर के प्रकट करने वाले मन से मिलता है।

> मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर का आत्मा। परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं (1 कुरिन्थियों 2:11-13)।

(2) समझ ज्ञान को सही ढंग से इस्तेमाल में लाने वाली योग्यता है। मसीही लोगों को समझ या बुद्धि के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहा जाता है (याकूब 1:5, 6)। सुलैमान सही विनती करने वाला एक अच्छा उदाहरण है, उसने माना कि उसे मालूम नहीं है कि इस्राएल पर शासन कैसे करना है, सो उसने परमेश्वर से समझ और पहचान मांगी। क्योंकि उसने पहचान और परख मांगी थी, उसने लम्बी आयु, धन या अपने शत्रुओं के ऊपर विजय जैसी चीज़ें न मांगकर उसने ये चीज़ें मांगी थी, इस कारण परमेश्वर ने उसे बुद्धि और विवेक वाला मन देने का वचन दिया (1 राजाओं 3:12)।

परमेश्वर ने वर्तमान युग के लिए बुद्धि या समझ के स्रोत के रूप में यीशु को दिया (1 कुरिन्थियों 1:30; कुलुस्सियों 2:2, 3)। परमेश्वर को मानवीय समझ के द्वारा नहीं जाना जा सकता (1 कुरिन्थियों 1:21)। जो सच्चाइयां पौलुस ने लिखीं वे उस समझ के अनुसार थीं जो पिता ने उसे दीं (2 पतरस 3:15)।

(3) पहचान ज्ञान और समझ को सही ढंग से लागू करने से मिलती है, जो कि परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में आवश्यक है।

इस्राएल के सम्बन्ध में यशायाह की टिप्पणी को यीशु ने (यशायाह 6:9, 10) अपनी पीढ़ी के लोगों को भी लागू किया। उन्होंने अपनी आंखें और कान बंद कर लिए थे, ताकि वे पहचान न

पाएं; इस कारण उन्होंने क्षमा पाने के लिए परमेश्वर की ओर नहीं लौटना था (मरकुस 4:12)। रोम में पौलुस ने उनके मन की कठोरता के कारण यहूदियों के लिए इस वचन को दोहराया (प्रेरितों 28:26, 27)। कई यहूदी परमेश्वर की धार्मिकता के प्रति अपनी अज्ञानता के कारण उद्धार नहीं पा सके (रोमियों 10:1-3)।

पौलुस ने अन्यजातियों के सम्बन्ध में भी लिखा। अपने मन की व्यर्थता के कारण उनकी समझ अंधी हो गई थी, जिस कारण उन्हें मसीह के जीवन में से निकाल दिया था। ऐसा उन में अज्ञानता के कारण और उनके मनों की कठोरता के कारण हुआ (इफिसियों 4:17, 18)।

कई बार पवित्र शास्त्र को पहचानने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है। अपने जी उठने के बाद यीशु ने पवित्र शास्त्र को खोलकर समझाया ताकि प्रेरितों को उसके बारे में कही गई भविष्यद्वाणियों की पहचान हो जाए (लूका 24:45)। हब्शी खोजा यानी इथोपियाई अधिकारी यीशु के सम्बन्ध में (प्रेरितों 8:30-33), यशायाह की भविष्यद्वाणी को पहचानने (यशायाह 53) में अगुआई चाहता था।

हमें पहचान रखने वाले लोग बनना आवश्यक है जिन्हें परमेश्वर की इच्छा की समझ होती है (इफिसियों 5:17)। आज हमारे बीच में परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोग नहीं हैं जो पवित्र शास्त्र को समझने में हमारी सहायता कर सकें। नये नियम के पृष्ठ इसलिए लिखे गए थे ताकि हम परमेश्वर के प्रकाशन को समझ पाएं (2 कुरिन्थियों 1:13; इफिसियों 3:3-5)।

पवित्र शास्त्र के कुछ भाग दूसरे भागों की तरह समझने आसान नहीं हैं। पतरस ने लिखा कि पौलुस के कुछ लेख समझने कठिन थे (2 पतरस 3:16)। जो लोग पवित्र शास्त्र तक की अपनी पहुंच में सावधान नहीं हैं वे उन यहूदियों के जैसे हो सकते हैं जिनका सामना यीशु ने किया। उसने उन्हें बताया कि वे गलत हैं क्योंकि वे पवित्र शास्त्र या परमेश्वर की सामर्थ को नहीं समझते थे (मत्ती 22:29)।

क्षमा के लिए समझ या पहचान का होना आवश्यक है। बीज बोने वाले के दृष्टांत में यीशु ने कहा, ''हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो'' (मत्ती 13:23)। खोया हुआ व्यक्ति वही होगा जो, जब समझ नहीं पाता है तो शैतान को अपने मन में से वचन को चुराने देता है, जिससे उसका उद्धार नहीं होगा (मत्ती 13:19)।

परमेश्वर के लोगों को ज्ञान, बुद्धि और समझ की आवश्यकता है। हमें इन्हें सही जगह पर, जो कि यीशु है देखना आवश्यक है, जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं।

परमेश्वर के योग्य चाल चलना (1:10)

मसीही लोगों को परमेश्वर के योग्य चाल चलने, उसके लिए फल लाने और उसमें बलवंत बनने के लिए ज्ञान, बुद्धि और समझ को पाना आवश्यक है।

(1) *परमेश्वर की संतान के लिए उसे भाने के लिए परमेश्वर के योग्य चाल चलना आवश्यक है।* पवित्र शास्त्र बताता है कि हमें कैसे चलना है:

- दिन में (यूहन्ना 11:9)।
- नये जीवन में (रोमियों 6:4)।
- विश्वास से (2 कुरिन्थियों 5:7)।
- मसीही बुलाहट के योग्य (इफिसियों 4:1)।
- भले कामों में (इफिसियों 2:10)।
- ज्योति में (1 यूहन्ना 1:7)।
- जैसे यीशु चलता था (1 यूहन्ना 2:6)।
- उसकी आज्ञाओं के अनुसार (2 यूहन्ना 6)।

पवित्र शास्त्र यह भी सिखाता है कि हमें कैसे *नहीं* चलना है।

- दुष्टों की युक्ति पर (भजन संहिता 1:1)।
- रात को या अंधेरे में (यूहन्ना 11:10; 12:35; 1 यूहन्ना 1:6)।
- शरीर के अनुसार (रोमियों 8:4; 2 कुरिन्थियों 10:2)।
- इस संसार की रीति पर (इफिसियों 2:2)।
- जैसे अन्यजाति चलते हैं (इफिसियों 4:17)।
- अनैतिक व्यवहार (कुलुस्सियों 3:5-10)।

हमें सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम कैसे और कहां चलें। हर मार्ग की एक मंज़िल होती है। तंग फाटक और पाबन्दियों वाला मार्ग जीवन की ओर ले जाता है, परन्तु चौड़ा फाटक और बिना पाबन्दियों वाला मार्ग विनाश की ओर ले जाता है (मत्ती 7:13, 14)।

(2) मसीही लोगों के लिए फल लाना आवश्यक है। फल वाला पेड़ किसी काम का नहीं यदि वह फल न लाए। यीशु ने अंजीर के पेड़ को इसलिए श्राप दिया था कि यह सूख जाए क्योंकि यह फल नहीं ला रहा था (मत्ती 21:19)।

यीशु ने सिखाया कि वह सचमुच में दाखलता है और हम जो उसके अनुयायी हैं टहनियां हैं। वह फल न लाने वाली टहनियों को काट डालता है। परन्तु यदि हम उसमें बने रहें तो बहुत फल जाएंगे, क्योंकि उससे अलग होकर हम कुछ नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:1-6)। यदि हम बहुत फल लाते हैं तो पिता को महिमा देते हैं क्योंकि यही हमारा मिशन है (यूहन्ना 15:8, 16)। मसीह के साथ हमारे मिलन का उद्देश्य, विवाह के मेल की तुलना में ''परमेश्वर के लिए फल'' लाना है (रोमियों 7:4)।

नया नियम दो प्रकार के फलों की बात करता है जो मसीही लोग ला सकते हैं। पहला हमें ''आत्मा का फल'' के रूप में प्रसिद्ध आत्मिक गुण होने आवश्यक हैं (गलातियों 5:22)। हमें अपने विश्वास में इन्हें जोड़ते हुए बढ़ाना आवश्यक है (2 पतरस 1:5-7)। परमेश्वर उन्हीं लोगों को तैयार करता है, जिन्हें वह यह गुण दिलाना चाहता है, ''चैन के साथ धर्म का प्रतिफल'' (इब्रानियों 12:11ख; देखें फिलिप्पियों 1:11)।

खोए हुए लोग जिन्हें मसीह के पास लाया जाता है वे दूसरा फल हैं। यीशु ने अपने चेलों

को बताया कि आत्माओं की कटनी काटने वाले ''अनन्त जीवन के लिए फल'' इकट्ठा करते हैं (यूहन्ना 4:36)। यह दिखकर कि ''जैसे मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले,'' ''सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हैं'' (रोमियों 1:13ख, 15)। पौलुस ने रोम जाने की अपनी दृढ़ इच्छा जताई।

यीशु ने हमें अपने साथ जिलाया है ताकि हम उसके लिए फल ला सकें। यदि हम इस बात में उसे निराश करते हैं तो हम उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर रहे हैं जिसके लिए उसने हमें बचाया है (फिलिप्पियों 1:22)।

(3) *मसीही लोगों को बलवंत होना आवश्यक है।* शारीरिक जीवन को सामर्थ उपयुक्त भोजन और व्यायाम से मिलता है। ऐसा ही नियम मसीही जीवन पर लागू होता है। मसीही लोगों के लिए वचन की लालसा करनी आवश्यक है ताकि वे इसके द्वारा बढ़ सकें (1 पतरस 2:2)। आत्मिक जीवन को मज़बूत बनाने वाला भोज परमेश्वर का वचन ही है (मत्ती 4:4)।

विशेष आत्मिक सामर्थ पिता की और यीशु की सहायता से मिलती है (2 थिस्सलुनीकियों 2:16, 17; 3:3; 1 पतरस 4:11ख; 5:10)। बिना यीशु के हम ''कुछ नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5)। उसने वचन के द्वारा, साथी मसीही लोगों की सेवकाई के द्वारा सहायता (मत्ती 22:32; प्रेरितों 15:32) और पवित्र आत्मा के द्वारा जो भीतरी व्यक्ति को मज़बूत बनने में सहायता करता है, उपलब्ध कराई है (इफिसियों 3:16)। मसीही लोगों के पास उससे जो इस संसार में है, बड़ी सामर्थ है (1 यूहन्ना 4:4)।

अपनी सबसे बड़ी परीक्षा की घड़ी में यीशु को भी सहायता की आवश्यकता पड़ी थी। जब उसने क्रूस के क्लेश, ठुकराए जाने और पीड़ा के आने का सामना किया तो उसने पिता से विनती की कि यह कठोरा उससे टल जाए। बेशक उसकी विनती नामंज़ूर कर दी गई पर स्वर्ग से एक फरिश्ता आकर उसे हिम्मत दिलाता था (लूका 22:42, 43)। परीक्षा के हमारे समयों में भी हमें अपनी बड़ी परीक्षाओं पर जय पाने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है। पौलुस ने अपनी सेवकाई में उसे सामर्थ देने और रोम की अपनी परीक्षा में मसीह की सहायता को माना (1 तीमुथियुस 1:12; 2 तीमुथियुस 1:17)। यीशु ने पौलुस के शरीर में कांटा दिया, परन्तु प्रेरित को मज़बूत बनाने के लिए उसकी निर्बलता के द्वारा उसने अपने उद्देश्यों को पूरा करना था (2 कुरिन्थियों 12:9, 10)।

परमेश्वर की महिमा की शक्ति के अनुसार बलवन्त होने के कारण ही मसीही लोग सहनशील, धीरजवान और आनन्दित हो सकते हैं। जिनमें ये गुण हैं उनके जीवन पूर्ण और संतुष्ट होंगे।

एक चलन जो परमेश्वर को भाता है (1:10)

जब मसीही लोग पाप करते हैं और मन नहीं फिराते, तो वे परमेश्वर के स्वभाव को नहीं दर्शाते या प्रभु के योग्य चाल नहीं चलते हैं। एक आत्मिक अगुवे का बेटा या बेटी, पिता के स्नेहपूर्ण निर्देशन के बावजूद नासमझी से चलकर उस भक्त पिता के योग्य चाल नहीं चल रहा था। मसीही लोगों का जीवन ऐसा होना आवश्यक है जिससे परमेश्वर को उन्हें अपनी संतान कहने में प्रसन्नता हो (2 कुरिन्थियों 6:17, 18; 1 यूहन्ना 3:1) और परमेश्वर को उनका पिता

होने में शर्मिंदगी न हो (इब्रानियों 11:16)। जो मसीही इस प्रकार नहीं चलते हैं वे परमेश्वर के नाम को बदनाम करते हैं (रोमियों 2:23, 24) और ऐसे पवित्र स्वर्गीय पिता के अयोग्य हैं।

प्रभु में बलवन्त (1:11)

मसीही व्यक्ति की सामर्थ केवल परमेश्वर की सामर्थ नहीं, बल्कि उसकी अपनी भी है। आत्मा हमारी निर्बलता में हमारी सहायता करता है, परन्तु हमे अपना योगदान देना आवश्यक है। पौलुस ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर ने सब कुछ किया या उसने स्वयं सब कुछ किया। उसने कहा, ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। जब वह काम कर रहा होता था तो परमेश्वर उसके साथ काम कर रहा होता था। हमें जो कुछ हम प्रभु के लिए कर सकते हैं सहायता के लिए उस पर भरोसा करते हुए काम करते रहना चाहिए। परिणाम यह होगा कि परमेश्वर हमारे द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा। पौलुस ने लिखा था, ''क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों को करने का प्रभाव डाला है'' (फिलिप्पियों 2:13) और ''इसलिए न तो लगाने वाला कुछ है, और न सींचने वाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ाने वाला है'' (1 कुरिन्थियों 3:7)।

यीशु के द्वारा योग्य हुए (1:12-14)

पौलुस ने आभार जताया कि ये भाई मीरास के लिए योग्य ठहराए गए थे (आयत 12)। डॉक्टरों, डेंटिस्टों, वकीलों, शिक्षकों तथा कई अन्य व्यवसायियों को अपना काम करने के योग्य होने से पहले कुछ कोर्स पूरे करने आवश्यक होते हैं। यह योग्यता जहां व्यक्तिगत प्राप्ति से मिलती है वहीं स्वर्गीय मीरास के सम्बन्ध में ऐसा नहीं होता है। परमेश्वर हम से केवल इतना चाहता है कि हम उस में भरोसा रखें जो उसे सही उत्तर देने से होता है (इब्रानियों 5:8, 9; 11:6)। पिता ने हमारी योग्यता व्यक्तिगत गुण के द्वारा नहीं बल्कि यीशु की प्राप्ति के द्वारा सम्भव बना दी है (इफिसियों 2:8, 9)।

मीरास के लिए पिता द्वारा योग्य बनाए गए लोग वे हैं जिन्हें यीशु के राज्य में पहुंचाया गया है (1:13)। मसीही लोगों को दोहरी नागरिकता मिलती है: हम संसार में हैं परन्तु संसार के नहीं (यूहन्ना 17:11-18)। हमारे दो देशों में से अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर का अनादि, स्वर्गीय राज्य है: ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं'' (फिलिप्पियों 3:20)। इसी कारण हमारा जीवन आत्मिक राज्य की संतान के जैसा होना आवश्यक है। पतरस ने लिखा है,

> पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है (1 पतरस 2:9, 10)।

इस जीवन को त्यागने पर विश्वासी मसीही लोग एक अनन्त घर में अर्थात उस स्वर्गीय

राज्य में जाएंगे जिसके हम पहले ही नागरिक हैं। इस वर्तमान समय में, ''परदेसी और यात्री'' के रूप में जो अपने आत्मिक स्वदेश से बहुत दूर हैं हमें ''सांसारिक अभिलाषाओं से बचे'' रहना आवश्यक है (1 पतरस 2:11)।

पौलुस ने इस बात को समझा कि कुलुस्से के लोगों ने अपने आपको अपने पापों से शुद्ध नहीं किया बल्कि यीशु ने उन्हें क्षमा दी (कुलुस्सियों 1:14)। यीशु हमें अपने वचन के द्वारा शुद्ध करता है। इस शुद्धता और क्षमा को पाने के लिए हमें उस ''में'' होना आवश्यक है। क्षमा पाने, उसके लिए उपयोगी और उपजाऊ होने के लिए हमें मसीह के साथ अपने सम्बन्ध में बने रहना आवश्यक है।

ज्योति की हमारी मीरास (1:12-14)

मसीही लोगों के लिए ज्योति की मीरास में इस वर्तमान जीवन में मसीह की ज्योति में होना और इस जीवन के पूरा होने के बाद स्वर्ग की आशा का होना है (1 पतरस 1:3, 4)। हमें अंधकार की शक्ति में से निकालकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराकर निकालने के द्वारा ऐसी आशिषों के लिए हमें योग्य बनाने वाला परमेश्वर ही है (कुलुस्सियों 1:13)। मीरास ऐसी चीज़ नहीं होती, जिसके कोई हक्कदार हो या जिसे कमाया गया हो, बल्कि यह इसलिए दी जाती है क्योंकि वे किसी की संतान हैं। स्वर्ग की मीरास पाने वाले लोग परमेश्वर की संतान हैं (गलातियों 4:7), यानी वे जो विश्वास और बपतिस्मा के द्वारा उसकी संतान बने हैं (गलातियों 3:26, 27)।

(1) कुलुस्सियों 1:13, 14 परमेश्वर को कुलुस्सियों को अंधकार के वश से छुड़ाकर उन्हें मसीह के राज्य में प्रवेश कराने वाले के रूप में दिखाता है। कुलुस्सियों ने अपने आपको नहीं निकाला था। केवल वही है जो लोगों को अंधकार के वश के हाकिम शैतान की गिरफ्त से बचा सकता है।

(2) मसीही लोगों को शैतान के इलाके अर्थात दुष्ट संसार से अंधकार के वश से निकाला गया है (1 यूहन्ना 5:19)। उन्हें अंधकार के कामों को उतार फैंककर (रोमियों 13:12) उन में भाग लेने से इनकार करना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 6:14ख; इफिसियों 5:11, 12)। पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो'' (इफिसियों 5:8); वे रात और अंधकार थे, परन्तु अब वे ''ज्योति की संतान और दिन की संतान'' थे (1 थिस्सलुनीकियों 5:4, 5)। ज्योति और अंधकार के बीच झगड़े के कारण मसीही लोगों को अंधकार के हाकिमों के विरुद्ध लड़ने के लिए परमेश्वर के हथियार बांध लेना आवश्यक है (इफिसियों 6:11, 12)।

(3) अंधकार में चलने से बचने के लिए यीशु जो ज्योति है के पीछे चलना आवश्यक है (यूहन्ना 8:12)। बुराई के अनुसार रहने वाले लोग ज्योति से घृणा करते हैं क्योंकि उन्हें अंधकार अच्छा लगता है (यूहन्ना 3:20)। अंधकार में रहने वाले लोग परमेश्वर के साथ संगति नहीं करते, परन्तु ज्योति में रहने वालों की संगति परमेश्वर के साथ है (1 यूहन्ना 1:6, 7)। ये लोग ज्योति की संतान हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:5)।

(4) मसीह का राज्य स्वर्ग और पृथ्वी पर उसका वर्तमान शासन है (मत्ती 28:18) जिसका

आरम्भ उसके जी उठने और स्वर्गीय पिता के पास ऊपर उठाए जाने के बाद हुआ था (इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 3:22)। उसका शासन उसकी वापसी तक यूं ही रहेगा। तब वह राज्य को पिता को लौटा देगा (1 कुरिन्थियों 15:22-27)। इन दोनों राज्यों में रहने वालों की स्थिति अलग अलग थी:

	शैतान का राज्य	*मसीह का राज्य*
प्रेरितों 26:18—	''अंधकार''	''ज्योति''
	''शैतान का अधिकार''	''परमेश्वर''
		''पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ ... जो पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएंगे''
1 पतरस 2:9—		''चुना हुआ वंश''
		''राजपदधारी, याजकों का समाज''
		''पवित्र लोग''
		''परमेश्वर की निज प्रजा''
1 पतरस 2:10—	''लोग नहीं''	''परमेश्वर की प्रजा''
	''दया नहीं हुई थी''	''दया हुई है''

पौलुस की ज़िम्मेदारी अन्यजातियों को अंधकार में से निकालकर ज्योति में और शैतान के वश से छुड़ाकर परमेश्वर के राज्य में पहुंचाने की थी ताकि उन्हें पापों की क्षमा और उनके साथ जो पवित्र किए गए हैं मीरास मिल सके (प्रेरितों 26:18)। इस कारण, पाप क्षमा होने पर लोगों को शैतान के वश में से छुड़ाकर यीशु के राज्य में पहुंचा दिया जाता है। ऐसा तभी होता है जब कोई बपतिस्मा लेता है (प्रेरितों 2:38; 22:16), यानी जब वह जल और आत्मा से जन्म लेता है (यूहन्ना 3:5; प्रेरितों 8:12)।

जो लोग मसीह में हैं वे लोग वे हैं जिन्हें क्षमा किया गया है (कुलुस्सियों 1:14)। बपतिस्मे के समय उस रेखा को पार करते हुए जो हमें मसीह के राज्य से शैतान के अधिकार के लोगों को अलग करती है, व्यक्ति मसीह में आता है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)।

आनन्द पर ध्यान रखें (1:11ख, 12)

आनन्द करना और धन्यवाद देना मसीही व्यक्ति के फोकस पर निर्भर करता है। कोई उन बातों पर विचार कर सकता है जो मन को प्रसन्नता से भरती हैं और वह आभार मानता है (फिलिप्पियों 4:8), क्या ऐसी समस्याएं जो उसे उदास और अकृतघ्न बना देती हैं। छोटी

लड़की को अपने पिता को अपने प्रिय कुत्ते को दफ़नाते हुए खिड़की में से देखकर दुख हुआ। फिर उसकी मां उसे एक और खिड़की में ले गई जहां अभी-अभी एक सुन्दर गुलाब खिला था। लड़की की उदासी अपने फोकस पर बदलाव करने के कारण आश्चर्य और आनन्द में बदल गई। मसीही लोगों के रूप में हम भी आनन्द और आभार से भर सकते हैं, यदि हम सही बातों पर विचार करें।

मसीह के राज्य में पहुंचाए जाना (1:13)

उद्धार पाने के लिए खोए हुओं के लिए परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना जो कुछ यह सिखाता है उस पर विश्वास करना और इसकी बात मानना आवश्यक है। लूका ने उस पल को दिखाया, जब परमेश्वर खोए हुओं को अपने पुत्र के राज्य में प्रवेश करवाता है। उसने लिखा, ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए'' (प्रेरितों 2:41)। उद्धार पाए हुए इन लोगों को कलीसिया में पहुंचाने का काम प्रभु ही कर रहा था: ''जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था'' (प्रेरितों 2:47)।

टिप्पणियां

[1]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सापोजिशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 56. [2]देखें रोमियों 1:10; 2 कुरिन्थियों 13:7, 9; इफिसियों 1:16; फिलिप्पियों 1:4; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:11; 2 तीमुथियुस 1:3; फिलेमोन 4. [3]देखें रोमियों 15:30; 2 कुरिन्थियों 1:11; फिलिप्पियों 1:19; 1 थिस्सलुनीकियों 5:25; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1; फिलेमोन 22. [4]देखें यूहन्ना 12:3; प्रेरितों 5:3; रोमियों 1:19; फिलेमोन 4:18. [5]देखें रोमियों 6:4; 1 कुरिन्थियों 7:17; 2 कुरिन्थियों 5:7; 10:3; गलातियों 5:16; 6:16; इफिसियों 2:10; 5:2, 8; कुलुस्सियों 2:6; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 4:1. [6]देखें रोमियों 5:2; 11:20; 14:4; 1 कुरिन्थियों 15:1; 16:13; इफिसियों 6:11, 13, 14; फिलिप्पियों 4:1; कुलुस्सियों 4:12; 1 थिस्सलुनीकियों 3:8; 2 थिस्सलुनीकियों 2:15. [7]लोगों को प्रसन्न करने का सुझाव मत्ती 14:6; मरकुस 6:22; प्रेरितों 6:5; रोमियों 15:1, 2; 1 कुरिन्थियों 7:33, 34; 10:33; गलातियों 1:10; थिस्सलुनीकियों 2:4. परमेश्वर को भाने के विचार पर चर्चा रोमियों 8:8; 1 कुरिन्थियों 7:32; 1 थिस्सलुनीकियों 2:4, 15; 4:1 में दी गई है। [8]ए. टी. रॉबर्टसन, *पॉल एंड द इंटलेक्चुअल्स: द एपिस्टल टू द कोलोसियंस,* संशो. व संपा. डब्ल्यू. सी. स्ट्रिकलैंड (नैशविल्ल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1959), 36. [9]एच. सी. जी. माऊल, *द एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1893; रिप्रिंट, 1902), 73. [10]*द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* चौथा संशो. संस्क., संपा. बारबरा एलैंड, कर्ट एलैंड, जॉहनस करविडोपाउलोस, कारलो एम. मार्टिनी, एंड ब्रूस एम. मैज़गर (स्टॅटगर्ट: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1998)।

[11]जे. बी. लाइटफुट, *सेंट पॉल'स एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन, संशो.* (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1916), 139. [12]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए निडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हेल्पस टु ट्रांस्लेटरस (न्यू यार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1977), 20. [13]माउल, 76. [14]ब्रेचर एंड निडा, 20. [15]ई. के. सिंपसन एंड एफ. एफ. ब्रूस, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल्स टू द इफिसियंस एंड द कोलोसियंस,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 191. [16]वही, 189-90।